तर्पण : समकालीन ग्रामीण संरचना में जातीय उत्पीड़न और जाति संघर्ष का सर्जनात्मक दस्तावेज

*** सरसिज कुमार सिंह**

आधुनिक युगीन संवेदना के समर्थ कथाकार शिवमूर्ति ने अनेक कहानियों एवं उपन्यासों की रचना की है। 'कसाईबाड़ा', तिरियाचरित्तर, केशर–कस्तूरी आदि कहानियाँ हिन्दी साहित्य की श्रेष्ठ कहानियों में है। इनकी औपन्यासिक कृतियाँ–त्रिशूल, तर्पण आखिरी छलांग आदि है। इनमें 'तर्पण' शीर्षक उपन्यास वर्ग–संघर्ष एवं वर्ण संघर्ष पर आधारित उत्कृष्ट रचना है। आलोच्य उपन्यास में शताब्दियों से चली आ रही सवर्णों की मनुवादी विचारधारा जिसमें दलित–शोषित वर्ग निरन्तर पिस रहा है, पर जोरदार प्रहार किया गया है। इसमें जहाँ एक ओर हजारों वर्षों से पीड़ित जनों का यथार्थ वर्णित है, तो वहीं दूसरी ओर उनकी मुक्ति चेतना की कथा का उल्लेख किया गया है।

शिवमूर्ति का 'तर्पण' उपन्यास दलित–मुक्ति चेतना का एक ऐसा दस्तावेज है जिसके माध्यम से समाज के उच्च वर्ग के लोगों के चंगुल से निम्न वर्ग के लोगों को उन्हीं के द्वारा उत्पन्न क्रान्तीय चेतना से मुक्त कराने का प्रयास किया जा सकता है।

उपन्यास का प्रारम्भ एक ऐसी घटना के चित्रण से किया गया है जो हजारों वर्षों से होती चली आ रही है। जिसे समाज के वर्ग विशेष ने नियति का खेल मान लिया है तथा एक वर्ग अपना अधिकार समझकर उसे करता चला आ रहा है।

गाँव के ब्राह्मण धर्मदत्त का बेटा चन्दर दलित युवती राजपत्ती से बलात्कार का प्रयास करता है किन्तु उसके साहस के आगे ब्राह्मण युवक का दुस्साहस छोटा पड़ जाता है, और वह अपने इस निकृष्ट कर्म में सफल नहीं हो पाता है। दलित युवती शोर मचाती है, पास के दूसरे खेत में घास छील

* शोध छात्र, हिन्दी विभाग, डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)।

रही स्त्री (पेरमा की माई) उसकी सहायता के लिए दौड़ पड़ती है। इससे उस युवती को बल मिलता है, तथा वह ब्राह्मण युवक चन्दर को पूरी हिम्मत से पकड़ लेती है। इस समय वर्गीय चेतना का स्वर मुखरित होता है। परेमा की माई उसे क्रोध में बिना किसी संकोच के अनेक नसीहतें दे डालती हैं– ''अरे तुम लोगों की आँख का पानी एक दम मर गया है? आँख में फूली पड़ गई है,?बिटिया–बहिन की पहचान नहीं रह गई है; तो कैलसिया (चन्दर की बहन) को काहे नहीं पकड़ लेता घरवे में .....तर्पण पृ0 10

इस खबर को पूरे गाँव में फैलते देर न लगी। युवती के पिता (पियारे), सामाजिक कार्यकर्ता (भाई जी) तथा गाँव के अन्य अनेक बुजुर्ग, नवयुवक आदि मिलकर बलात्कार की झूठी रिपोर्ट लिखवाने का फैसला करते हैं। किन्तु ऐसी परिस्थिति में पुलिस महकमें की यथार्थ स्थिति दृष्टिगत होती है। दिनभर के इंतजार के बावजूद रिपोर्ट नहीं लिखी जाती। सामाजिक कार्यकर्ता (भाई जी) को भी दीवान के तीखे, अपमानजनक शब्द बाणों से आहत होना पड़ता है। प्रार्थना पत्र लिखने के लिए एक कागज माँगने पर दीवान उन्हें घुड़क लेता है और कहता है– ''यह बनिया की दुकान नहीं थाना है'' (तर्पण पृ0 – 29) अथक प्रयासों के बावजूद सबल वर्ग वादी पर भारी पड़ता है, रिपोर्ट नहीं लिखी जाती। पुलिस वाले ले–देकर शान्त रह जाते हैं।

उपन्यास में आकर्षक बिन्दु तब आता है; जब पुलिस कप्तान के दबाव में आकर दरोगा ब्राह्मण युवक को गिरफ्तार कर थाने ले जाता है, तथा रसूखदार बाप के सामने ही दो–चार थप्पड़ जड़ देता है, धर्मदत्त अपने बेटे को रिहा करवाने के लिए एड़ी–चोटी का दम लगा देते हैं। नामी वकील करते हैं, किन्तु उसकी रिहाई नहीं हो पाती। हमेशा की तरह उच्च वर्ग एक होता है। धरमू पण्डित ठाकुर पल्टन सिंह को प्राचीन परम्पराओं का वास्ता देकर उसके दूर के रिश्तेदार सी0ओ0 साहब से मामले को शान्त करवाने की बात करता है– ''जाने–अनजाने कोई चूक हुई हो तो उसे भूल जाइए, लम्बरदार। सनातन से क्षत्रिय दुष्टों, पापियों, असुरो और राक्षसों से ब्राह्मणों

की रक्षा करते आए हैं। सी0ओ0 साहब से कहकर मामला रफा–दफा करवाइए।'' (तर्पण पृष्ठ–74)

प्राचीन काल से जाति का दंश झेलने वाले, असुर, राक्षस आदि संज्ञा प्राप्त निम्न वर्ग के लोग आपस में विचार करते हैं, कि यदि किसी भी स्थिति में उस ब्राह्मण युवक को कुछ दिन और जेल में सड़ाया जा सकता है तो करेगें– ''मुन्ना कहता है– ''पैसा खर्च करके अगर उसे साल भर जेल में सड़ाया जा सकता है तो सड़ाया जायेगा।''

''मगर पैसा आयेगा कहाँ से?''

''चंदा किया जायेगा।'' भाई जी कहते है– ''बिरादरी के हर घर पीछे अगर पाँच सौ रूपये की भी मदद मिल जायेगी तो.....।'' (तर्पण पृष्ठ–77)

उच्च वर्ग सदा से निम्न वर्ग के साथ छल–छद्म का खेल खेलता रहा है। जब सब ओर से असफल हुआ तो धन का लोभ दिखाकर उसे अपनी ही जाति के लोगों के खिलाफ खड़ा करने की कोशिश करता है। किन्तु यहाँ दाँव उलटा पड़ता है। धरमू की पत्नी जब गाँव की ही एक दलित वृद्धा (रमझरिया की दादी) को पैसे का लोभ देकर न्यायालय में झूठी गवाही देने की बात कहती है, तो वह ऐसा करने से न सिर्फ मना करती है, बल्कि उसे नसीहत भी दे डालती है–'' हाथ नाचती है बुढ़िया 'बड़े–बड़े वकील–बरिस्टर को हजार रूपये देने में दर्द नहीं होता और हमे दिखाती है पचास रूपल्ली। पचास रूपल्ली मे 'धरम' लेने चली है। पहले 'वैसे धरम लेता है बेटा। फिर 'ऐसे' धरम लेती है महतारी। नहीं बेचना हमें अपना धरम।'' (तर्पण पृष्ठ–80)

झूठे गवाह और झूठी दलीलें एक बार फिर सबल सवर्णों का हथियार बनते हैं। इसी आधार पर ब्राह्मण युवक चन्दर न्यायालय से मुक्त होकर पूरे उत्साह के साथ– ''चन्दर भैया जिन्दाबाद'' (तर्पण पृष्ठ–94) के जयघोष के साथ अपने घर वापस आता है। घर पहुँचकर अपने विजयनाद के रूप में बन्दूक की गोलियाँ दागता है। जो मानों शोषक–वर्ग की शोषित

वर्ग पर विजयनाद प्रतीत होती है। ''घर में घुसते ही अपनी दुनाली बन्दूक निकालकर बाहर आता है। चन्दर हवाई फायर करता है– धाँय–धाँय।'' (तर्पण पृष्ठ–95)

चन्दर की करतूत से पूरी दलित पट्टी किसी अप्रत्याशित घटना से आशंकित हो उठती है। उसके मन में अनेक घटनाएँ जीवित हो उठती है। सामूहिक नरसंहार, बलात्कार, लूटपाट आदि जो पूर्व में अपने झूठे अपमान से बौखलाए सवर्णों ने कई बार किया है– ''चमरौटी के लोग सनाका खा जाते हैं। अपनी–अपनी झोपड़ी में भागने को तैयार। बहुत बार सुना गया है– बौखलाए ठाकुर–बाभनों ने हरिजन बस्ती फूँक दी। सामूहिक नरसंहार। सामूहिक बलात्कार कतल की रात न हो जाय आज की रात। दो महीने जेल की सजा काट कर आया है। कुछ भी कर सकता है....'' (तर्पण पृष्ठ–95)

हरिजन एक्ट कानून दलितों के लिए वरदान तथा सवर्णो के लिए अभिशाप के रूप में है। उपन्यास में इसका उल्लेख इस प्रकार किया गया है– ''बड़ा बेढ़ब कानून है'' मामा जी बताते हैं ''जैसे पहले ब्रह्म हत्या का कोई प्रायश्चित नहीं था, वैसे इस ''चमरदोखी'' कानूनी की कोई काट नहीं है, जेल जाने के सिवा। ब्रह्म हत्या का पाप तो हत्या होने पर लगता था। चमरदोखी तो चमार को चमार कह देने भी से ही लगा जाता है।'' (तर्पण पृष्ठ–95)

गाँव के ठाकुरों को लगता है कि ब्राह्मण और शूद्र के झगड़े में ब्राह्मण की तरफदारी न करना शूद्र उपकार करने के समान है तथा ''शूद्र उपकार ब्रह्महत्या के बराबर है।''(तर्पण पृष्ठ–98)। धरमू की पत्नी के जली–कटी सुनाने पर वर्ग विशेष की जातीय चेतना जाग्रत होती है, तथा कभी भी पलटकर जवाब न देने वाली रजपतिया की माँ पण्डिताइन को गालियाँ देते हुए कहती है– ''दिमाग तो खराब है तुम्हारे दर्जन भर 'दामादों' का जो गोली–बन्दूक लेकर गाँव के दरवाजे–दरवाजे धमकाते घूम रहे हैं।'' (तर्पण–पृष्ठ– 99) इस पर मालकिन उससे तेज आवाज में कहती है– 'दूर

से बात कर नीच''। खोपड़ी पर चढ़ जायेगी क्या?'' रजपतिया की माँ ईंट का जवाब पत्थर से देती है– ''नीच होगी तुम तुम्हारे पूत–भतार। जो गली–गली कूकूर जैसे पूँछ हिलाते सूघंते घूमते हैं..... हम किस बात के नीचे हुए रे।'' (तर्पण पृष्ठ–99)

उपन्यास में क्रान्ति का स्वर मुखर है। सामाजिक कार्यकर्ता (भाई जी) सभी युवकों को सचेत रहने तथा दूसरे पर निर्भर न रहकर अपनी सुरक्षा स्वयं करने की बात करता है– ''जैसे रेलवे स्टेशन पर लिखा होता है अपने सामान की सुरक्षा स्वयं कीजिए वैसे ही मैं कहता हूँ। अपने जान–माल की रक्षा आप कीजिए। जब भी घर से निकलिए लाठी–डंडे हाथ में लेकर निकलिए। हाथ में लाठी देखते ही अगला मुँह सम्भालकर बात करता है। नौजवान लोग कमर में चाकू–गुप्ती खोंसकर चलें। खाली खोंसे ही न रहें। किसी न किसी बहाने उसका प्रदर्शन भी करें।'' (तर्पण पृष्ठ–100)

उपन्यासकार ने गाँव में होने वाले स्वाँग के माध्यम से लोगों तक क्रान्ति की चेतना पहुंचाने का तथा सवर्णो की दुर्दशा का चित्रण किया है। नर्तकी एक गीत गाकर लोगों को बताती है कि कारागार में चन्दर पण्डित के पिता धरमू का क्या हाल रहा होगा– ''अरे पूत के कुकरमें धरमू गए जेहल खनवा।''

मुँगरन मार परत होई
जेहल खनवा मा धरमू रोवल होई।'' (तर्पण पृष्ठ–102)

उपन्यास का अन्त 'तर्पण' शीर्षक को चरितार्थ करते हुए किया गया है। पियारे का बेटा मुन्ना ब्राह्मण युवक चन्दर पर जोरदार हमला करके चित कर देता है, तथा अपने वंशजों एवं अपनी बहन जपतिया के अपमान का बदला लेने के लिए उसकी नाक काट लेता है। मुन्ना के इस साहसिक कार्य पर उसका पिता पियारे मन ही मन प्रसन्न होता है तथा कहता है– ''वह खुद कब से अरमान पाले था ऐसा करने का..... लेकिन कुछ नहीं कर पाया। कब से जोर जुल्म सह रही है उसकी जाति..... कोई माई का लाल न पैदा हुआ मुँहा–मुँही जवाब देने वाला और आज उसके बेटे ने ऐसा कर दिखाया

तो छिपे–छिपे घूमने का क्या मतलब?यह तो दुनिया–जहान में डंका पीटकर बताने वाला काम है। लेकिन नाक क्यों काटा? सीधे मूंड़ ही क्यों न काट लिया'' (तर्पण पृष्ठ–113)

पियारे दरोगा के सम्मुख जुर्म स्वीकार करके आत्मसमर्पण कर देता है। दरोगा के पूछने पर कि किसके ललकारने से काटा'' तो वह बिना किसी पश्चाताप एवं संकोच से जबाब देता है– ''बहन–बेटियों की इज्जत पर डाका डालने वाले को ठिकाने लगाने के लिए भला किसी के ललकारने –भड़काने की जरूरत पड़ती है? अकेले काटा सरकार।'8 (तर्पण पृष्ठ–114)

पियारे के माध्यम से राजनेताओं का यथार्थ चित्रण किया गया है। 'नेता कभी कुछ करते हैं सरकार? ऊ तो डर के मारे पेड़ पर चढ़ गए थे।'' (तर्पण पृष्ठ–114)

ब्राह्मणों द्वारा बनाये गये नियम–कानून, पूर्वजों को तर्पण करने के लिए चारो–धाम जाने की प्रथा आदि पर कुठाराघात करते हुए पियारे जेल जाते समय अत्यन्त संतुष्ट है, तथा जेल को ही चारो धाम इस अर्थ में मानता है कि इन सवर्णों के पाप से मुक्त होकर ही वह तथा उसके पूर्वज तृप्त हो सकते हैं– ''जेल वाहन की जाली में मुँह सटाकर फागुन की ठंडी पुरवा को फेफड़े में भरता है पियारे और आँखे मूंद लेता है। उसे लगता है, जैसे पुरखों का 'तर्पण' करने के लिए 'गया–जगन्नाथ जी' जा रहा है।'' (तर्पण पृष्ठ–116)

इस प्रकार उपन्यास का अन्त वर्षों से चली आ रही है घृणित परम्परा पर घृणा किये जाने वाले वर्ग की विजय एवं उसकी सुखद आत्मानुभूति पर होता है। उपन्यास में अनेक ऐसे अनछुए पहलू रह गए हैं जिनका इतने कम शब्दों में विवेचन उद्घाटन कर पाना सम्भव नहीं है।

उपन्यासकार शिवमूर्ति वर्तमान परिप्रेक्ष्य के ग्रामीण यथार्थ एवं वास्तविक चेतना के समर्थ रचनाकार है। अवध प्रान्त के गाँव के जनसाधारण की अवधी भाषा के शब्दों तथा अनेक कहावतों एवं मुहावरों के

प्रयोग से उपन्यास को जीवन्त स्वरूप प्रदान किया है। गँवई भाषा, जीवन, रीति–परम्पराएँ, रहन–सहन आदि इसमें साकार रूप में चित्रित किए गए हैं। संविधान के विभिन्न धाराओं यथा – 164, 364/511, 354 आदि तथा मुकदमें की कार्यवाही, अधिवक्ताओं का बहस–मुबाहिसा, राजनीतिक दॉव पेंच, पुलिस महकमें में व्याप्त भ्रष्टाचार आदि के सफल चित्रण से ज्ञात होता है कि उपन्यासकार ने समाज को सूक्ष्म दृष्टि से देखा–परखा है।

निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि ''तर्पण'' उपन्यास वर्गीय चेतना एवं वर्ग संघर्ष तथा ग्रामीण अंचल में व्याप्त सवर्णों के सर्वहारा पर अत्याचार का एक स्वच्छ प्रतिबिम्ब है।